बाजार में पहुंचाने में कठिनाई हो रही है। लोग बहुत परेशान हैं। अतः मैं भारत सरकार के रेलवे मंत्री जी से मांग करता हूं कि नालागढ़ की वह रेलवे पटरी, जो 1926 में बिछी थी, उसको दोबारा लगाया जाए और यह भी बड़ी हैरानी की बात है कि हिमाचल एक्सप्रेस के नाम से जो गाड़ी नंगल जाती है, उस में हिमाचल का कोई क्षेत्र नहीं आता।

मैं मांग करता हूं कि हिमाचल प्रदेश में नालागढ़ को रेलवे से तुरन्त मिलाया जाए। अगर यह जल्द मुमकिन न हो, तो धनौली रेलवे स्टेशन से ढेरुवाला जो पंजाब की सीमा का एक ग्राम है, तक जोड़ा जाए। इसका फासला 3 किलोमीटर से अधिक नहीं है। इसका सर्वे कर के काम शुरू किया जाए, ताकि इस क्षेत्र के लोग लाभान्वित हो सकें।

(ii) NEED FOR TAKING OVER OF MOHINI MILLS LTD. BEGHORIA IN 24 PARGANAS DISTRICT OF WEST BENGAL.

SHRIMATI GEETA MUKHERJEE (Panskura): Sir, under rule 377, I wish to raise the following matter:

Mohini Mills Ltd., a textile mill, located in Belghoria of 24-Parganas district of West Bengal is under lock-out for more than one year and eight months. On the 4th August, 1981, a 23-year old wife of an employee of the mill committed suicide being unable to withstand the pangs of hunger of her small child. Condition of all the workers and employees of the locked-out mill is so bad that similar fate may wait for many. Minister of Commerce of Government of India earlier promised to take over the said mill by the Government. But despite this prolonged agonising lock-out, nothing has proceeded in that direction.

I request that urgent steps be taken for the take-over of Mohini Mills, so that tragic incidents like Minatis untimely death may not occur again, and the workers and employees may be saved from direct distress.

(iii) NEED TO DECLARE RAMESWARAM A MAJOR PORT.

SHRI M. S. K. SATHIYENDRAN (Ramanathapuram): Sir, under rule 377, I wish to raise the following matter:

Rameshwaram is a pilgrim centre of not only all-India importance but also of great international value and potential. Rameswaram is the first landing point for thousands of tourists from Sri Lanka. The steamer named Ramanujam, in remembrance of the great Indian mathematician, carries on alternate days a minimum of six hundred foreign tourists from Sri Lanka. None of the major ports in South India carries such a heavy burden on alternate days. Unfortunately, Rameswaram continues to be a minor port woefully lacking even in elementary amenities for the tourists. Besides tourists, Rameswaram receives repatriates from Sri Lanka. On their arrival, the hopes and aspirations of these repatriates are belied beyond their expectations. These repatriates are made to stand in sun and showers for hours for Customs scrutiny. It is unfortunate that the Customs officials treat all these repatriates as smugglers, and without appreciating the fact that they have left everything in Sri Lanka, they are subjected to inhuman examinations. While the Customs officials concentrate on them, the actual smuggling around the island of Rameswaram goes on merily unchecked. On enbarkment, the tourists have to face a lot of difficulties.

Their difficulty is further intensified by the absence of train facility. The inordinate delay in the execution of Pamban bridge works on the part of the State Government of Tamil Nadu has further aggravated their misery in moving to the mainland quickly.

[Shri M. S. K. Sathiyendran]

In these circumstances, it is imperative that Rameswaram should be declared a major port; and then only all the infrastructure facilities will be built. When it is declared a major part, then only it can become the real watch-dog on the Indian Ocean which is presently the hot-hed of international rivalry. From the strategic point of view also, Rameswaram should be declarea a major port.

(iv) NEED FOR TAKING-OVER BY GOVERNMENT OF EYE HOSPITAL SITAPUR IN UTTAR PRADESH.

श्री राम लाल राही (मिसरिख) : उपाध्यक्ष महोदय, हमारे देश में असंख्या ऐसे व्यक्ति हैं जो जन्म से अथवा उसके बाद पौष्टिक आहार के अभाव में अथवा अन्य दैवी आपदाओं के शिकार हो, आंखें खो बैठते हैं। विकलांग वर्ष में इन विकलांगों के लिए अथवा आने वाली भावी पीढ़ी इस शिकार से बचे, नेत्र चिकित्सा विज्ञान की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में देश के विभिन्न अंचलों में लाखों लोग नेत्र रोगों से पीड़ित है। रोगों का निरन्तर कुप्रभाव बढ़ता ही जा रहा है जिसका निदान सुनिश्चित किया जाना महत्वपूर्ण है।

वर्तमान समय में भारत भर में कुल 6 प्रमुख नेत्र संस्थान हैं, जिनमें उत्तर प्रदेश के जनपद सीतापुर का नेत्र संस्थान 'आंख का अस्पताल, सीतापुर' अपना विशिष्ट स्थान रखता है। एशिया के प्रमुख चिकित्सा संस्थानों में है। यह आंख का अस्पताल अपने वर्तमान रूप में पद्मभूषण डा० महेश प्रसाद मेहरे की पचास वर्षों की साधना का प्रतीक है। डा० मेहरे जहां एक ओर सामाजिक अभियन्ता के रूप में एक बड़ा संस्थान स्थापित करने में सफल हुए, वहीं नेत्र चिकित्सा शास्त्र में राष्ट्रीय ख्याति के नेत्र रोगों के मर्मी।

उनका स्वर्गवास होते ही यह आंख का अस्पताल धीरे धीरे पतोन्मुख होता जा रहा है। अस्पताल एक ट्रस्ट में निहित है। इस ट्रस्ट को स्वर्गीय डा० मेहरे ने ही स्थापित किया था जिसका संचालन जिला अधिकारी की अध्यक्षता में होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही यह अस्पताल द्रुत गति से प्रगति की ओर अग्रसर हुआ। प्रदेश, केन्द्र तथा अन्तर्देशीय विभिन्न सरकारों से ही इस चिकित्सा संस्थान को आर्थिक सहायता मिलती रही है।

कानपुर विश्वविद्यालय से पाश्चात्य नेत्र चिकित्सा पद्धति में यह स्नातकोत्तर डिप्लोमा की शिक्षा एवं परीक्षा के लिए एक कालेज के रूप में मान्य भी है। कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध संस्थानों की सूची में यह नेहरू इंस्टीट्यूट आफ आप्थैलमोलोजी के नाम से दर्ज है। पद्मभूषण स्व० डा० मेहरे के के निधन के बाद अस्पताल की गिरती हुई साख को देख कर ही केन्द्र सरकार और स्वास्थ्य मंत्रालय में निरन्तर यह प्रयास मैं करता रहा हूं कि इस संस्थान को राष्ट्रीय हित में केन्द्र सरकार अधिग्रहीत कर समुचित व्यवस्था के माध्यम से इसका संचालन करे ताकि डा० मेहरे के प्रयासों द्वारा अर्जित करोड़ों की सम्पत्ति राष्ट्रीय जीवन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

दुर्भाग्य से नेत्र चिकित्सा विज्ञान के इस प्रमुख संस्थान के कर्मचारी एवं चिकित्सक सदैव शोषण के शिकार रहे है। डाक्टरों एवं कर्मचारियों को निर्धारित मिनिमम वेज भी नहीं दिया जाता। बहुत अरसे बाद अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति उनमें चेतना जागी है। परिणाम-स्वरूप 10 अगस्त से अपनी 9 मांगों को ले कर वे हड़ताल पर हैं। आगन्तुक नये मरीजों की भर्ती व निरीक्षण बन्द है। सैकड़ों मील से आये रोगी सैकड़ों की तादाद में नित्य-प्रति निराश ही लौट रहे हैं। अस्पताल की मर्यादा नष्ट हो रही है और डाक्टर